''जैन दर्शन में निहित शान्ति शिक्षा का अध्ययन''

[1]ज्ञान प्रकाश मिश्रा, [2]डॉ. सुनिल कुमार
[1]शोधार्थी, [2]प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय
अलवर–भिवाड़ी हाईवे, चिकानी, अलवर

शोध सारांश :–

आज धन–सम्पत्ति को ही मनुष्य ने देवता मान रखा है उपभोक्तावादी संस्कृति ने श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों को छिन्न–भिन्न कर दिया । आदमी दिशाहीन एवं अशान्त होकर त्रस्त एवं पीड़ित है। इसके कारण हर क्षण–नये–नये प्रश्न और समस्याएँ उपस्थित हो रही है । आज विश्व में क्षेत्रवाद, भाषावाद धर्म जाति सम्प्रदाय आदि के आधार पर विघटनकारी ताकतें अपने चरम पर है इनकी हिंसक और विनाशकारी गतिविधियों से कोई ऐसा देश नहीं है जो अछूता हो । इन्हीं समस्याओं ने नागरिकों के शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के सामने अपना सिर बार–बार उठाया है ।

हमारे देश भारत जिसे सोने की चिड़िया, ऋषियों की तपों भूमि, देव स्थान, आध्यात्मिक भूमि आदि नामों से जाना जाता रहा है । वह आज धार्मिक असहिष्णुता रूपी अजीबो गरीब समस्या से ग्रसित हो चुका है जो कि परस्पर हमारे धार्मिक आस्था व आदर के नाजुक धागे को जर्जर किये जा रहा है और इस पर सबसे भयावह रूप धार्मिक आतंकवाद के रूप में वर्तमान में हम देख रहे है । जिसे राजनीतिक संघर्ष का नाम दे दिया जाता है । जिसका सबसे अधिक प्रभाव युवाओं में देखा जा सकता है । ये वे लोग मनुष्य है जिन्हें उनके शिक्षकों ने जिसे ईश्वर से भी श्रेष्ठ दर्जा कवियों द्वारा दिया है वास्तविक मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करते समय पूर्ण व उचित आवासीय सुविधाएँ नहीं की आज की शिक्षा बालकों को वह नहीं दे पा रही है जिसके वे हकदार है विद्या वह है जो विनम्र बनाये ।

'सा विद्या या विमुक्तये, अर्थात् विद्या वही है जो विमुक्ति प्रदान करे। दैहिक जीवन मूल्यों में उदर पूर्ति व्यक्ति की प्रथम आव यकता है। इससे इन्कार नहीं किया जा सकता है। किन्तु इसे ही शिक्षा का अर्थ एवं इति नहीं बनाया जा सकता, क्योंकि यह कार्य शिक्षा के अभाव में भी सम्भव है। यदि उदरपूर्ति ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य हो तो फिर मनुश्य पशु से भिन्न नहीं होगा। जैन दर्शन के अनुसार उस शिक्षा या ज्ञान का अर्थ नहीं है जो हमें चारित्रिक भुद्धि या आचार भुद्धि की दिशा में गति शील न करता हो। शिक्षा से व्यक्ति अज्ञान का नाश करता है । जिस प्रकार धागे से सुई गिर जाने पर भी नश्ट नहीं होती है अर्थात् खोजी जा सकती है। उसी प्रकार श्रुत सम्पन्न जीव संसार ने नश्ट नहीं होता है। जैन मान्यता के अनुसार वह शिक्षा निरर्थक है जो व्यक्ति के चारित्रिक विकास करने में समर्थ नहीं है। जो शिक्षा को पाशविक व्यसनों से उपर नहीं उठा सकती वह वास्तविक ि ाक्षा नहीं है।

मनुश्य जीवन पर्यन्त शिक्षा की प्राप्ति विविध रूपों में करता है तथा अपने ज्ञान के उत्तरोत्तर विकास के लिये शिक्षा का सहारा लेता है।

वर्तमान शिक्षण प्रणाली में व्यक्ति के विकास के साधनों का सर्वथा अभाव पाया जाता है। दूसरी तरफ हमारी प्राचीन शिक्षा व्यक्तित्व के चरम विकास और निर्वाण की बातें करती है। वहीं आधुनिक शिक्षा व्यक्ति को अर्थ और काम तक ही सीमित करने के प्रयास में संलग्न है, जिसके कारण आज की शिक्षा व्यक्ति को पूर्ण संस्कृति विकसित करने में असमर्थ प्रतीत हो रही है। आज के कम्प्यूटर, ई–मेल, इण्टरनेट, वाट्सएप, सेल्फी युग में भौतिकता एवं काम की भावना की बातें शिक्षा से अधिक मिलती है किन्तु मोक्ष, निर्वाण की बाते करना हास्यापद प्रतीत होता है।

समस्या की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :–

पिछली सहस्त्राब्दियों से समूची मानव जाति ने दो विश्व युद्ध व अनेकों छोटे–बड़े युद्ध देखे है सदियों तक युद्धों की महाविनाश लीला को देखा और उनके विध्वंसक परिणामों को भी भोगा । मानव स्वभाव की यह अनोखी विडम्बना है कि उसकी तीव्र लालसा जहॉ उसे हथियार उठाने युद्ध करने और निरन्तर संघर्ष करने की उत्तेजना प्रदान करती है वही दूसरी ओर मानव जीवन भर असीम शान्ति की मृगतृष्णा में भटकता रहता है इतिहास ऐसे अनेको उदाहरणों से भरा पड़ा है जबकि युद्ध के बाद शान्ति का मार्ग खोजा गया व एक लम्बी शान्ति के बाद युद्ध की चिंगारी भड़क उठी अर्थात् मानव स्वभाव का दैत्य पक्ष उसे युद्ध में संलग्न कर देता है वही उसके स्वभाव का दैवीय पक्ष उसे शान्ति के सन्मार्ग की ओर अग्रसर करता है ।

ज्यों–ज्यों मानव सभ्यता ने वैज्ञानिक तकनीकी व भौतिक विकास करते हुए आधुनिकतम रूप को प्राप्त किया, वैसे–वैसे परमाणु रासायनिक व जैविक हथियारों के निरन्तर विकास ने मानव जाति को बारूद के ढेर पर बैठा दिया है जहॉ एक चिंगारी ही समूचे विनाश के लिए काफी होगी ।

ऐसे वातावरण में मानव जाति व सभ्यता की सुरक्षा के लिए आवश्यक है कि विश्व के समस्त देशों के बीच मधुर सम्बन्धों का विकास हो, सोहार्द्रपूर्ण वातावरण का विकास हो, सह–अस्तित्व, सहिष्णुता की भावना का विकास हो व विश्व शान्ति की स्थापना ।

आर्यावृत ऐसा प्रथम राष्ट्र/देश है जिसने सर्वप्रथम अर्न्तक्षेत्रीय राष्ट्रीयता के सम्प्रत्यय तथा वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा सबके समक्ष रखी जिसका वर्णन हितोपदेश (विष्णु कुमार कृत) में मिलता है । जैसे कि सभी राष्ट्र अपने शैक्षिक मूल्य निर्धारित करते है वैसे ही भारतीय शिक्षा ने अपने मूल्य निर्धारित किये है ।

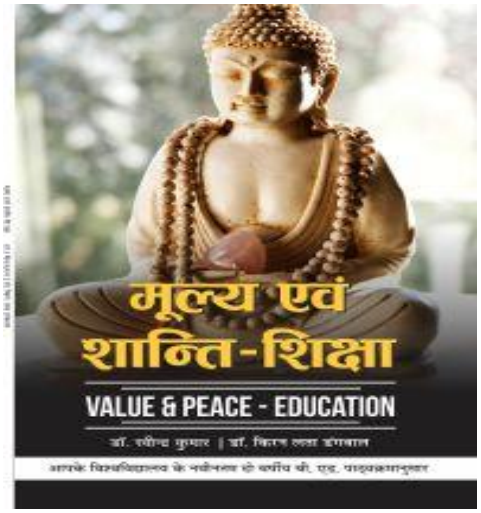

शिक्षा ने अपने मूल्य निर्धारित किये है शान्ति शिक्षा का उद्भव भी मानव सभ्यता के उद्भव के साथ–साथ ही हुआ है विश्व शान्ति की स्थापना के आदर्श लक्ष्य हेतु ही शान्ति शिक्षा की अवधारणा का जन्म हुआ । इसे शिक्षा के स्वरूप के साथ जोड़ा जा रहा है । पिछले दशकों से अस्तित्व में आई शान्ति शिक्षा वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता के रूप में उभरी है क्योंकि शान्ति शिक्षा ही विश्व शान्ति, स्थिरता, सहिष्णुता दृढ़ व नियोजित भविष्य व मानव जाति के निरन्तर विकास का एकमात्र साधन है ।

भारत के परिपेक्ष्य में 'सीखना' कभी भी स्वतंत्र ज्ञान का भाग नहीं रहा है अपितु इसे धर्म का ही भाग माना जाता रहा है । इसे हमेशा आत्मानुभूति या मोक्ष प्राप्ति का ही भाग माना जाता रहा है । इसे हमेशा आत्मानुभूति या मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है **(सा विद्या या विमुक्तयें)**

'विद्या ऐसी हो जो मनुष्य को सांसारिक दुःखों तथा कर्मों से मुक्ति दिलाकर परम आनन्द प्रदान करें ।

प्रारम्भ से ही अधिगमकर्ता पर धार्मिक विचारों का प्रभाव रहा है। जैसे कि स्वयं को सम्पूर्ण जगत का या सर्वोच्च प्राणी का एक हिस्सा मानना, या अपनी पहचान इसी रूप में बनाना ।

शिक्षा के इस सार्वभौमिक धर्मनिरपेक्ष कारक का वर्णन हम न केवल हिन्दूधर्म में नहीं हिन्दूदर्शन में देखते है अपितु अन्य धर्मो जैसे जैन, बौद्ध इस्लाम, ईसाई धर्म आदि में दर्शनों में भी इसका वर्णन मिलता है । शान्ति शिक्षा के वर्तमान स्वरूप का श्रेय प्राचीन भारतीय शिक्षा के गुण (**सभी को साथ लेकर चलना**) को जाता है ।

जैन संस्कृति मूलतः अपरिग्रहवादी संस्कृति है। जिन, निर्ग्रन्थ वीतराग जैसे शब्द अपरिग्रह के ही द्योतक है। मूर्छा परिग्रह का पर्यायर्थक है। यह मूर्छा प्रमाद है और प्रमाद कषायजन्य भाव है। राग–द्वेषादि भावों से ही परिग्रह की प्रवृत्ति बूठ, चोरी, कुर्शील उसके अनुवर्तक हैं और परिग्रह उसका फल है। परिग्रही वृत्ति व्यक्ति को हिंसक बना देती है। इस हिंसक वृत्ति से व्यक्ति तभी विमुख हो सकता है जब वह अपरिग्रह या परिग्रह परिमाणवृत का पालन करे।

क्षमा मार्दव आदि दस धर्मों का पालन भी धर्म है। मनुष्य गिरगिट स्वभावी है, अनेक चित्त वाला है। क्रोधादि विकारों के कारण वह बहुत भूलें कर डालता है। क्रोध विभाव है, परदोषदर्शी है, क्षमा आत्मा का स्वभाव है। परपदार्थों में कतृत्व बुद्धि से, मिथ्यादर्शन से क्रोध उत्पन्न होता है और क्षमा सम्यदर्शन से उत्पन्न होती है। पंचम गुणस्थानवर्ती

अणुव्रर्ती से लेकर नौवें–दसवें गुणस्थान में महाव्रती के उत्तमक्षमा है पर नौवे ग्रैवेयक तक पहुँचने वाले मिथ्या दृष्टि द्रव्यलिंगी के उत्तमक्षमा नहीं होती।

व्यक्ति और समाज को जोड़ने के लिए मातृभाषा का प्रयोग एक आवश्यक तत्व है। सभी को जोड़ने का और अपनी विचारधारा को सशक्त ढंग से प्रस्तुत करने का भी वह एक साधन है। महावीर स्वामी ने उस समय बोली जाने वाली प्राकृत को अपनी अभिव्यक्ति का साधन बनाया और अपने दर्शन को जनता के समक्ष रखा। जनता ने भी उसका भरपूर स्वागत किया। अभिव्यक्ति के क्षेत्र में लोक बोली का प्रयोग निश्चित ही एक क्रान्तिकारी कदम था। उत्तरकालीन जैनाचार्यों ने भी अभिव्यक्ति के इसी साधन को अपनाया। यही कारण है कि जैन साहित्य प्राकृत में बहुत मिलता है।

<u>समस्या कथन</u> :– **''जैन दर्शन में निहित शान्ति शिक्षा का अध्ययन''**

<u>तकनीकी शब्दों का पारिभाषिकरण</u>

जैन दर्शन क्या है – जैन दर्शन प्राचीन भारतीय दर्शन है । इसमें अहिंसा पर अत्यधिक बल दिया गया है । जैन दर्शन में 24 तीर्थकर हुए है, जो संसार के चक्र में फंसे जीवों के कल्याण के लिए उपदेश देने के लिए इस धरती पर आये थें।

शान्ति शिक्षा – शान्ति शिक्षा यह दो शब्दों शान्ति और शिक्षा से मिलकर बना है । शान्ति मस्तिष्क में हिंसा की अनुपस्थिति की अवस्था है ।

शान्ति का अर्थ है – ''स्वयं का स्वयं के साथ होना

शान्ति का अर्थ है :– 'मन का सन्तोष'

बहुत से विचारकों ने शान्ति की अपनी परिभाषा दी है जैसे – च्मंबम पेश्दवज उमतमसल जीम ंइमदबम वश्ंृत इनज जीम चतमेमदबम वश्पिदरनेजपबम वश्सिूं वश्वितकमत पदशैवतज वश्हिवअमतदउमदज ;भ्श्सइमतज म्पदेजममद द्धश्जबकि शिक्षा की सहायता से हम अपने गुणों का विकास करते है और ज्ञान प्राप्त करते है शिक्षा एक उपचारात्मक ढंग/तरीका है जिसके द्वारा हम बालकों को हिंसा के मार्ग को चुनने से रोकते है ।

शिक्षा का अर्थ/परिभाषा :–

शिक्षा का अंग्रेजी रूपान्तर म्कनबंजपवद है म्कनबंजपवद शब्द उत्पत्ति लैटिन भाषा के म्कनबंजनउ शब्द से मानी जाती है । म्कनबंजनउ शब्द दो शब्दों मश तथा क्नबवसे मिलकर बना है मश्का अर्थ जवपद क्नबव का अर्थ है जव समंक वितजी वतजव मगजतंबज वनज अतः म्कनबंजपवद शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के निम्न शब्दों से मानते है ।[1]

अ. म्कनबमतम रू. जिसका अर्थ है । (ज्व इतपदह वितजीध्ज्वसमंक वनज) विकसित करना ।

ब. म्कनबंतम रू. जिसका अर्थ है (ज्व मकनबंजमए जव इतपदह नच जव तंपेम) शिक्षित करना/आगे बढ़ाना ।

स. म्कनबंजनउ :– जिसका अर्थ है (ज्व जतंपद वत ंबज व िजिमंबीपदह वत जंपदपदह) प्रशिक्षण, शिक्षण

शिक्षा का तात्पर्य – शिक्षा 'शब्द' संस्कृत की 'शिक्ष्' धातु से बना है । इसका तात्पर्य है – 'सीखना'

भारतीय वाड्मय में शिक्षा के लिए कतिपय शब्द –विधा, ज्ञान, बुद्धि आदि प्रयुक्त हुए है।

विधा का उद्गम विद् धातु से हुआ जिसका अर्थ है – जानना, पता लगाना, सीखना, प्राचीन समय में विद्या के रूप में स्वीकृत किया गया है ।

शिक्षा की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ

1. **उपनिषद् के अनुसार :–** ''शिक्षा वह है जिसका प्रमुख साध्य मुक्ति है ।
2. **कौटिल्य के अनुसार :–** ''शिक्षा का अर्थ देश के लिए प्रशिक्षण व राष्ट्र के लिए प्रेम है।''
3. **विष्णु पुराण के अनुसार :–** ''सा विद्या या विमुक्तये''
4. **स्वामी विवेकानन्द के अनुसार :–** ''हमें उस शिक्षा की आवश्यक है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरो पर खड़ा हो सकता है।''

[1] डी. डी. एल. शर्मा शिक्षा तथा भारतीय समाज पृ. सं. 10–12

5. **महात्मा गॉधी के अनुसार :–** ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जो शरीर मन और आत्मा का सर्वोत्कृष्ट उद्घाटन करे ।''

शान्ति शिक्षा :–

''अगर हम विश्व को वास्तविक शान्ति का पाठ पढ़ाना चाहते है तो हमें इसकी शुरूआत बच्चों से करनी होगी ।'' (**महात्मा गॉधी**)

''सारी शिक्षा शान्ति के लिए ही है ।'' (**मारिया मान्टेसरी**)

शान्ति के लिए शिक्षा, शान्ति शिक्षा से भिन्न है । शान्ति–शिक्षा में शान्ति की स्थिति पाठ्यचर्या में शामिल एक विषय की तरह है वही दूसरी ओर शान्ति के लिए शिक्षा में हम जिस रूप में शान्ति की बात करते है उस रूप में वह शिक्षा को गढने सॅवारने वाली दृष्टि बन कर उभरती हे । यह शिक्षा के आदान–प्रदान की प्रक्रिया में आने वाले एक युगांतकारी बदलाव का संकेत है ।

अनुसंन्धानकर्त्ता के लिये शान्ति शिक्षा का परिभाषिकरण उस योजनाबद्ध व्यूह रचना के रूप में किया जा सकता है जिसके द्वारा अन्याय, असमनता मानवाधिकार हिंसा आदि से उत्पन्न द्वन्द और हिंसा को समाप्त किया जा सके । इसके साथ ही इन सभी बुराइयों को उपयुक्त शिक्षण अधिगम युक्तियों द्वारा कम करने/घटाने वाले उपायों और साधनों को लागू करके आज के युग के मानव को एक जिम्मेदार वैश्विक नागरिक बनाया जा सके और संसार में शान्ति स्थापित की जा सके ।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

प्राचीन काल से ही आर्यवृत्त ने युद्ध जैसी विभीषिका तथा अराजकता पूर्ण वातावरण को झेला हैं और आज भी सम्पूर्ण संसार दुखों से पीड़ित व अशान्त है । वर्तमान परिवेश में शिक्षा का उद्देश्य अर्थोपार्जन तक ही सीमित होकर रह गया है हर कोई केवल 'स्व' के स्थार्थ पर ध्यान देता है वर्तमान वैश्विक समुदाय में बढती हिंसा साम्प्रदायिकता, भष्टाचार, वैमनस्य, तानाशाही महिला उत्पीड़न एवं शोषण बाल व किशोर अपराध आतंकवाद आदि समस्याओं के मूल में कही न कहीं हमारा विकृत शिक्षा तंत्र है एवं उससे जुड़े विविध घटक है ।

जिनमें से प्रमुख – अध्यापक शिक्षा, छात्र व्यवहार, विद्यालय वातावरण समाज, इत्यादि । जैन उपनिषदों में जिस मानसिक शान्ति की बात कहीं गई है । उसे आज की शिक्षा में लाना अत्यन्त कठिन कार्य प्रतीत होता है । जैन उपनिषदों में जिन शाश्वत मूल्यों, सद्गुणों गुरू शिष्य सम्बन्धी शिष्यों की जिज्ञासाओ, बह्म ज्ञान, परमशान्ति की बात दृष्टव्य होती है । वह वर्तमान शिक्षा प्रणाली हेतु धरोहर है । जिसका प्रयोग कर, शिक्षा सुधार हेतु प्रयास कर सकते है । उपनिषद्ो पर आधारित शिक्षा का लक्ष्य आत्मानुभूति है जो मस्तिष्क को अपार शान्ति प्रधान करने में सहायक है । परन्तु वर्तमान में मानव–मानव का शत्रु बनता चला जा रहा है । इसी कलह और मानसिक अशान्ति से मानव जाति को उबारने हेतु द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से ही शान्ति हेतु प्रयास किये गये । आज के इस कलहपूर्ण व दूषित वातावरण में ऐसी शिक्षा की आवश्यक है जो मानसिक शान्ति के साथ–साथ सहिष्णुता सौहार्द, प्रेम सह अस्तित्व, सत्यम् शिवम् सुन्दरम् जैसे शाश्वत मूल्यों का विकास कर सके । शिक्षा ही ऐसा माध्यम है जो बाह्य शान्ति के साथ–साथ आन्तरिक शान्ति प्रदान करे । शिक्षा में शान्तिपूर्ण मूल्यों को स्थापित करने में कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की महत्ती भूमिका रही है । यदि हम थोड़ा पीछे वैदिक युग में जाये तो हमें ज्ञात होगा कि वेद् उपनिषद् जो ज्ञान के स्त्रोत है उसमें पहले ही 'आत्मानुभूति' मानसिक शान्ति की बात कही गई है जिसके द्वारा व्यक्ति या शिष्यों में सात्विक गुणों का विकास होता है और वह आन्तरिक शान्ति जिज्ञासाओं की तुष्टि के साथ–साथ तप, संयम, स्वाध्याय, संकल्प शक्ति के बल पर अपने परम लक्ष्य ईश्वर को जानने व प्राप्त करने में सफल हो जाता है जहॉ उसके सारे, संशय, द्वन्दों का अन्त हो जाता है और परम आनन्द की अनुभूति होती है वर्तमान विसंगतियों से भरे संघर्ष पूर्ण वातावरण में जहॉ आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा ही हमारे लिए शान्ति प्राप्ति का प्रमुख स्त्रोत है । वह शिक्षा सात्विक व शान्ति शिक्षा द्वारा ही संभव है । जो विद्यार्थियों में सद्गुण विकसित कर उसे श्रेष्ठ उत्तम चरित्र सम्मत नागरिक बना सके जिसमें दूषित व हिंसक गुण लेशमात्र भी न हो, यह कार्य शिक्षा द्वारा ही संभव है वह भी शान्ति शिक्षा द्वारा।

समस्या का औचित्य :–

किसी भी समस्या को उद्घटित या प्रस्तुत करने का अनुसंधान कर्त्ता के पास कोई न कोई ध्येय होता है जिसे औचित्य का नाम दिया जाता है । बिना औचित्य के समस्या प्रस्तुत करना न तो सार्थक है न ही युक्तिपूर्ण है । बिना किसी ठोस कारण के समस्या की प्रस्तुतीकरण ऐसा प्रतीत होता है जैसे बिना जल के मछली, बिना श्रद्धा के भक्ति, बिना सहायक सामग्री के पाठ्योजना ।

दर्शन और शिक्षा का बहुत नजदीकी रिश्ता है । दर्शन मानव जीवन के विभिन्न पहलूओं का अध्ययन करता है तथा जीवन के उद्देश्यों का निर्धारण करता है । इन लक्ष्यों को पाना ही मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य है । शिक्षा इन लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक है । शिक्षा द्वारा ज्ञान तथा कौशल का विकास होता । शिक्षा हमेशा से ही दर्शन से प्रभावित रही है । शिक्षा के पाठ्यक्रम, पाठन विधि, इसके उद्देश्य को निश्चित करने में दार्शनिक विचारधाराओं तथा मान्यताओं का ही हाथ रहा है । दर्शन शिक्षा के सभी अंगों को प्रभावित करता है । जब–जब दार्शनिक विचारों में परिवर्तन हुआ है तब–तब शिक्षा के विभिन्न अंगों में भी परिवर्तन हुआ है दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू है । दर्शन जीवन पर विचार करता है तो शिक्षा उसका क्रियात्मक पहलू है, कहने का तात्पर्य है कि दर्शन विचार को जन्म देता है तो शिक्षा उस विचार को व्यावहारिक रूप प्रदान करती है । दर्शन और शिक्षा की इसी घनिष्ठता के कारण ही महान शिक्षाशास्त्री, महान दार्शनिक हुए है ।

प्लेटो सुकरात, लॉक, कमेनियस, रूसो, फ्रोबिल, डीवी, गांधी टैगोर, तथा अरविन्द घोष आदि महान दार्शनिकों के उदाहरण इस बात की पुष्टि करते है । इन सभी दार्शनिकों ने अपने दर्शन को क्रियात्मक अथवा व्यावहारिक रूप देने के लिए अन्त में शिक्षा का सहारा लिया है।

न्छण्ट ने शिक्षा को विश्व में स्थापित करने का महत्वपूर्ण माध्यम माना है साथ ही शान्ति शिक्षा को परिभाषित करते हुए व्याख्या की है । उससे संबंधित सभी गुणों जैसे अहिंसा, मैत्री, सहयोग, सहिष्णुता वसुधैव कुटुम्बकम सदाचार इत्यादि का वर्गीकरण किया है ।

न्छट के सुझाव का पालन करते हुए अपने–अपने स्तर पर सभी देश ने शान्ति शिक्षा स्थापित करने हेतु इसे शिक्षा के एक अंग के रूप में स्वीकार किया है ।

सभी देशों ने शान्ति स्थापित करने के अलग–अलग तरीके अपनाये जाते है उसी प्रकार भारत में भी छण्ब्त्ण्ण्ज और छण्ब्ज्ण्म ने परोक्ष और अपरोक्ष (प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष) रूप से विद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर इसे पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया है ।

उन्होने शान्ति शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा है ''कि शान्ति के लिए शिक्षा जीवन के लिए शिक्षा है जिसका उद्देश्य लोगों को ऐसे मूल्यों कौशलो और अभिवृत्तियों से लैस करना हे जिनसे उन्हें दूसरों के साथ सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार रखने वाले पूर्ण व्यक्ति और उत्तरदायी नागरिक बनने में मदद मिले । यह शिक्षा अध्ययन के बोझ को कम करने के साथ साथ जीने के आनन्द को मूर्त रूप प्रदान करती है। यह नैतिक विकास उनमूल्यों दृष्टिकोणों कौशलों के पोषण कर बल देती है ।

विकास उनमूल्यों दृष्टिकोणों कौशलों के पोषण कर बल देती है। जो प्रकृति और मानव जगत के बीच सामंजस्य बिठाने हेतु आवश्यक है। साथ ही उन्होंने शिक्षा को बालकों तक पहुँचाने हेतु अनेक विधियों का भी उल्लेख किया है जैसे खेल विधि, वाद–विवाद, संगोष्ठी, पाठ्यसहगामी क्रियाएँ भूमिका निभाना, नाटक शान्ति कविताओं का सृजन शान्तिगीत संगीत, राष्ट्रीय–अन्तराष्ट्रीय दिवसों में भागीदारी, धार्मिक उत्सवों पर्वों में भागीदारी इत्यादि सैद्धान्तिक तौर पर उन्होंने समाज में शान्ति स्थापित करने हेतु उचित सटीक उपायों की व्यवस्था की है ।

शान्ति शिक्षा को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी जोड़ा गया है लेकिन जब हम इसके व्यावहारिक पक्ष को देखते है तब हम पाते है कि इसमें बहुत सी खमियॉ है। शिक्षा के क्षेत्र में जिस सोच को लेकर हम आये थे वह हमें

किसी भी रूप में पूर्ण होती प्रतीत नहीं हो रही । जब शोधकर्त्ता ने इस विषय में गहन चिंतन किया तब उसे प्रतीत हुआ कि क्यों न इसके लिए हमारे द्वारा अपने प्राचीन ग्रन्थों जिसमें धार्मिक मान्यताएँ, विश्वासों, श्रेष्ठ गुणों का भण्डारण है जो शिक्षा व्यवस्था से किसी न किसी रूप में जुड़े है । उनका अध्ययन किया जाए ।

अध्ययन से संबंधित उद्देश्य :–

''जैन दर्शन में निहित शान्ति शिक्षा का अध्ययन'' समस्या के अध्ययन हेतु शोधार्थी ने विभिन्न उद्देश्य निर्धारित किये है जिसका यहॉ उल्लेख किया हैं ।

1. जैन दर्शन में निहित शान्ति शिक्षा का अध्ययन करना ।
2. जैन शान्ति शिक्षा हेतु आवश्यक पाठ्यक्रम का अध्ययन करना ।
3. जैन दर्शन की शिक्षा से संबंधित व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन करना ।
4. शिक्षक शिक्षार्थी का शान्ति शिक्षा से सम्बन्धित मूल्यों का अध्ययन करना ।
5. शान्ति शिक्षा से संबंधित राष्ट्रीय मूल्यों का अध्ययन करना ।
6. शिक्षक की भूमिका का शान्ति शिक्षा की प्राप्ति के संदर्भ में अध्ययन करना ।

समस्या से उभरते हुए प्रश्न :–

जहॉ समस्या होती है उसके निस्तारण हेतु व्यक्ति के मन में कुछ प्रश्न भी उभरते है जिनका उत्तर वह प्राप्त करना चाहता है क्योंकि प्रश्नों के माध्यम से ही समस्या पूर्णरूप से प्रकट होती है । इसीलिए यहॉ कुछ प्रश्नों का उल्लेख किया वे निम्न है –

प्र.1 जैन दर्शन एवं शान्ति शिक्षा में आवश्यक किन–किन व्यक्तिगत मूल्यों का योगदान है ?

प्र.2 जैन दर्शन में किन–किन राष्ट्रीय मूल्यों को शान्ति शिक्षा प्राप्त करने में सहायक माना गया है ।

प्र.3 जैन दर्शन एव शान्ति शिक्षा को प्राप्त करने में शिक्षक की भूमिका किस प्रकार आवश्यक है ?

प्र.4 शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध का शान्ति शिक्षा में क्या उपादेयता है ?

प्र.5 जैन दर्शन शैक्षिक पाठ्यक्रम प्राप्त करने में शान्ति शिक्षा का क्या महत्व है?

परिसीमन :–

1. प्रस्तुत अध्ययन जैन दर्शन में निहित शान्ति शिक्षा तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन व्यक्तिगत मूल्यों पर आधारित है ।
3. प्रस्तुत अध्ययन में राष्ट्रीय मूल्यों पर आधारित है ।
4. प्रस्तुत अध्ययन पाठ्यक्रम के उद्देश्यों पर आधारित है ।
5. प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षक शिक्षार्थी की भूमिका निहित है ।
6. प्रस्तुत अध्ययन में जैन दर्शन में निहित शान्ति शिक्षा के सिद्धान्तों पर आधारित है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- एन.आर., स्वरूप सक्सेना. (1975). शिक्षा सिद्धान्त : गुप्ता प्रैस. मेरठ
- अरूणा, डॉ. चौहान. (2006). समकालीन भारत एवं शिक्षा : राजस्थान प्रकाशन जयपुर
- अग्रवाल, डॉ. सन्धा. (2005). शिक्षा मनोविज्ञान. वाराणसी : विजय प्रकाशन मन्दिर.
- अग्रवाल, प्रो., वाई. पी. (2003). शिक्षा में अनुसन्धान. कोटा : पद्धतियॉ वर्धमान महा–विद्यालय. खुला विद्यालय.
- ओड, के. लक्ष्मी लाल. (2004). शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि
- जायसवाल, सीताराम. (2004) शिक्षा विज्ञान कोश. आगरा : साहित्य प्रकाशन, आगरा.
- जरारे, विजय. (2004) शोध प्रणाली मेरठ : ए. बी. डी. पब्लिशर्स.
- कमला, डॉ. कुलहरि (2016). शिक्षा का दर्शन. आस्था प्रकाशन. जयपुर.

❖ कपिल, एच. के. (2003). अनुसंधान विधियॉ. आगरा : भवन हाउस

❖ रीता, अरोड़ा. जयपुर : शिक्षा में नव चिंतन

❖ शर्मा, त्ण्छण् स्वरूप. (2008). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा

❖ शुक्ल, चुन्नीलाल (2007). साहित्य भण्डार. मेरठ : सुभाष बाजार.

❖ सरीन, शरीकला एवं सरीन, अंजनी (2007). शैक्षिक अनुसंधान की विधियॉ आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन.

❖ सत्यनारायण, डॉ. शर्मा (2004). समकालीन भारत एवं शिक्षा. आस्था प्रकाशन. जयपुर

Websites

1. **www.nesamkriti.com/essay-chapter/vedicconceptofeducation**
2. **www.hinduwebsite.com/upnishads.asp.**
3. **www.ncert.ac.in**
4. **www.google.com**
5. **shodganga.com**